श्री हरितालिका तीज (तीजा) व्रत कथा

संपूर्ण व्रत की
पूजन विधि एवं
आरती सहित।

ॐ

श्री

हरितालिका तीज व्रत-कथा

अनादिकाल से चली आ रही माँ पार्वती द्वारा प्रार्थना पद एवं महाराज हिमाचल एवं महारानी मैना की कथा एवं श्री शिव-पार्वती जी की पूजन विधि आरती सहित।

संस्थापक : दादा श्री श्यामलाल जी अग्रवाल

संकलन : श्रीमती मंजूलता अग्रवाल

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक

दादा श्यामलाल अग्रवाल आर.के. एण्ड संस

महेश पुस्तक भंडार

कोतवाली थाने के बाजू में, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.) मो. 7509116262

मूल्य-30/-

श्री हरितालिका तीज व्रत की महिमा

हरितालिका तीज का व्रत - भाद्रपद (भादों) महीने के शुक्ल पक्ष की तृतीया को किया जाता है। 'तृतीया' तिथि को किये जाने के कारण इस व्रत को ही - 'तीज का व्रत' या 'तीजा का व्रत' कहा जाता है। चूँकि हमारे देश 'भारत संघ' में भाद्रपद महीने में अच्छी बारिश होती है जिससे पेड़-पौधे हरे भरे हो जाते हैं और पूरे देश में चारों तरफ हरियाली छा जाती है। इसीलिए कहीं-कहीं पर इस व्रत को ही 'हरियाली तीज का व्रत' भी कहा जाता है। यह व्रत निर्जला एवं निराहार किया जाता है।

यह व्रत - सभी आयु की स्त्रियों के लिए अत्यंत उपयोगी और बहुत अधिक प्रभावी है। इस व्रत को करने से - अविवाहित लड़कियों को उत्तम पति प्राप्त होता है और विवाहित स्त्रियों के सुहाग की रक्षा होती है। इस दिन प्रायः सभी महिलाएँ - अपने घर में या किसी उद्यान (बगीचे) में झूला झूलती हैं और खुशियाँ मनाती हैं।

श्री हरितालिका व्रत की पूजन सामग्री

1. लकड़ी का पटा, 2. लाल रंग का कपड़ा, 3. साफ मिट्टी, 4. दीपक, 5. रुई, 6. घी, 7. धूप, 8. कपूर, 9. रोली, 10. अक्षत (चावल), 11. गंगाजल या नर्मदा जल (ना मिले तो सादा जल), 12. फूलों की माला, 13. दूध, 14. दही, 15. शक्कर, 16. शहद, 17. मौसम के अनुसार फल, 18. मिठाई, 19. पान, 20. सुपारी, 21. सुहाग-पिटारी (जिसमें कंघा, शीशा, सिंदूर, बिन्दी, सुरमा, चूड़ी, बिछिया, महावर आदि हों) एवं श्री शंकर भगवान एवं माता पार्वती जी की मूर्ति रखें।

श्री हरितालिका व्रत करने की विधि

इस व्रत को करने वाली स्त्रियों को व्रत वाले दिन सूर्योदय के साथ ही जाग जाना चाहिए और नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्नान कर लेना चाहिए। फिर साफ वस्त्र पहन लें। फिर अपने घर के पूजा का स्थान या आँगन साफ कर लें। फिर वहाँ पर आटे से चौक पूर लें। फिर मिट्टी से श्री शंकर-पार्वती जी की प्रतिमा बना लें। उसके बाद में - वहाँ पर लकड़ी का पटा रखें और उस पर लाल

रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर श्री शंकर-पार्वती जी की प्रतिमा को रखें। दूध, दही, शक्कर, शहद, जल इनको उचित अनुपात में मिलाकर 'पंचामृत' बनाकर रख लें। एक पात्र में थोड़ा-सा पानी रख लें। अन्य सभी सामग्री भी वहीं लाकर रख लें। इतना करने के बाद में - अब पूजा प्रारंभ करें। आप स्वयं कुश या ऊन से बने हुए आसन पर बैठें। फिर 'श्री गणेशाय नमः' कहकर श्री गणेश जी का ध्यान करें। फिर श्री शंकर-पार्वती जी को प्रणाम करें। फिर रूई व घी का दीपक जलायें और धूप जलाकर रखें। फिर अपने मन में 'ॐ नमः शिवाय' कहते हुए उनको एक-एक वस्तु अर्पित करती जायें - पहले उनको चंदन (अष्टगंध), चाँवल लगावें, फूलों की माला पहनायें, फल और मिठाई समर्पित करें, पंचामृत एवं पानी रखें, अन्त में पान-सुपारी समर्पित करें- इस प्रक्रिया को नैवेद्य समर्पित करना कहते हैं। इसके बाद में श्री शंकर-पार्वती जी को प्रणाम करें।

इसके बाद में - 'श्री हरितालिका तीज की व्रत कथा' को प्रारंभ करें कथा संपूर्ण होने के पश्चात् सभी लोग जयकारा लगायें - भगवान शंकर जी की जय, माता पार्वती जी की जय। इसके बाद में भगवान शंकर जी और माता पार्वती जी को प्रणाम करते हुए कहें - हे शिव, नंदी

भृगी, महाकाल, शम्भू। आपको नमस्कार है। हे शिवा, शिवप्रिया कल्याणकारिणी, जगतधात्री आपको नमस्कार है। जो अपने मस्तक पर चन्द्रमा धारण किये हुए हैं और सहज ही प्रसन्न होकर मनवाँछित फल प्रदान करते हैं- उन भगवान् भोलेनाथ को नमस्कार है। आप दोनों ही इस नश्वर संसार के भय-संताप से मेरी रक्षा कीजिए। आप मेरी और मेरे परिवार की सदैव रक्षा एवं उन्नति करें। मुझे और मेरे समस्त परिवारजनों को सद्मार्ग में प्रेरित करें।

इसके बाद में - भगवान श्री शंकर की आरती करें फिर कपूर की आरती' करें फिर क्षमा प्रार्थना करें। इसके बाद में - पंचामृत और फल मिठाई को प्रसाद की भाँति सबको वितरित कर दें और स्वयं भी ग्रहण करें। इसके बाद में व्रत का पारण करना चाहिए। (अर्थात् - भोजन आदि ग्रहण करना चाहिये) इस प्रकार से यह व्रत संपूर्ण होता है। मिट्टी की मूर्ति आदि सामग्री को उसी दिन किसी बहते हुए जलाशय (जैसे - नदी, नहर आदि) में प्रवाहित कर देना चाहिये। सुहाग-पिटारी की सभी वस्तुओं को अपने दैनिक प्रयोग में ले लेवें या पंडित जी को दान कर देवें।

श्री महामृत्युञ्जय मंत्र जाप

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

श्री हरितालिका तीज व्रत कथा

(भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को किया जाता है)

श्री परम पावन भूमि कैलाश पर्वत पर विशाल वट वृक्ष के नीचे भगवान शिव, पार्वती सभी गणों सहित बाघम्बर पर विराजमान थे। बलवान वीरभद्र, भृंगी, श्रृंगी, नन्दी आदि अपने-अपने पहरों पर सदाशिव के दरबार की शोभा बढ़ा रहे थे। गन्धर्व गण, किन्नर, ऋषिवर भगवान शंकर की विधि विधान अनुष्ठान छंदों से स्तुति गान स्वर अलापों से वाद्यों में संलग्न थे। उसी सुअवसर पर महारानी पार्वती जी ने भगवान शिव से दोनों हाथ जोड़कर प्रश्न किया कि हे महेश्वर मेरे बड़े सौभाग्य हैं जो मैंने आप सरीखे अर्धांग्नी पति को वरण किया। क्या मैं जान सकती हूँ कि मैंने वह कौन-सा पुण्य अर्जन किया है, आप अन्तर्यामी हैं, मुझ दासी को वर्णन करने की कृपा करें। महारानी पार्वती की ऐसी प्रार्थना सुनने पर शिवजी बोले हे पार्वती! तुमने अति उत्तम पुण्य का संग्रह किया था, जिससे मुझे प्राप्त किया है। वह अति गुप्त व्रत है पर तुम्हारे आग्रह पर

प्रगट करता हूँ। वह यह कि भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की तीज व्रत के नाम से प्रसिद्ध है। यह व्रत जैसे तारागणों में चन्द्रमा, नवग्रहों में सूर्य, वर्णों में ब्राह्मण, देवताओं में गंगा, पुराणों में महाभारत, वेदों में साम, इन्द्रियों में मन। ऐसा ही यह श्रेष्ठ व्रत है, जो तीज हस्त नक्षत्र युक्त पड़े वह और भी महान पुण्यदायक होता है।

ऐसा सुनकर माता पार्वती जी ने कहा हे महेश्वर ! मैंने कब और कैसे तीज व्रत किया था। विस्तार के साथ श्रवण करने की इच्छा है, इतना सुनकर भगवान शंकर बोले कि भाग्यवान उमा भारतवर्ष के उत्तर में हिमाचल श्रेष्ठ पर्वत है, उसके राजा का नाम हिमाचल है। वहाँ तुम भाग्यवती रानी मैना से पैदा हुई थीं, तुमने बाल्यकाल से ही मेरी आराधना करना आरम्भ कर दिया था। कुछ उम्र बढ़ने पर तुमने हिमाचल की दुर्गम गुफाओं में जाकर सहेली सहित मुझे पाने हेतु तप आरम्भ कर दिया। तुमने ग्रीष्म ऋतु में बाहर पानी में तप किया। हिम ऋतु में पानी में खड़े होकर मेरे ध्यान में संलग्न रहीं। इस प्रकार छः ऋतुओं में तपस्या करके भी जब मेरे दर्शन न मिले तब तुम ऊर्ध्व मुख होकर केवल वायु सेवन की। फिर वृक्षों के सूखे पत्ते खाकर इस शरीर

को क्षीण किया। ऐसी तपस्या में लीन देखकर महाराज हिमाचल को अति चिंता हुई और तुम्हारे विवाह हेतु चिंता करने लगे, इस सुअवसर पर महर्षि नारद जी उपस्थित हो गये। राजा ने अतिहर्ष के साथ स्वागत पूजन किया और आगमन का कारण पूछा।

नारद जी ने कहा - हे राजन्! मुझे भगवान् विष्णु ने भेजा है। मैं चाहता हूँ कि आपकी सुन्दर कन्या को योग्य वर प्राप्त हो, सो बैकुण्ठ निवासी शेषशायी भगवान् ने आपकी कन्या का वरण स्वीकार किया है। क्या आपको स्वीकार है, राजा हिमाचल ने कहा महाराज, मेरा सौभाग्य है जो मेरी कन्या को विष्णु जी ने स्वीकार किया और मैं अवश्य ही उन्हें अपनी कन्या का कन्यादान करूँगा। यह सुनिश्चित हो जाने पर नारद जी बैकुण्ठ पहुँचकर श्री विष्णु भगवान् से पार्वती के विवाह का पूर्ण होना सुनाया। इधर महाराज हिमाचल ने वन में पहुँचकर पार्वती जी से भगवान् विष्णु से विवाह होना निश्चय हो चुका है। ऐसा सुनते ही पार्वती जी को महान दुःख हुआ। उस दुःख से विहीन होकर अपनी सखी के पास पहुँचकर विलाप करने लगीं तो तुम्हारा विलाप देखकर सखी ने तुम्हारी इच्छा जानकर कहा - देवी मैं तुम्हें ऐसी गुफा में तपस्या को ले चलूँगी,

जहाँ महाराज हिमाचल भी न जा सकेंगे। ऐसा कह उमा सहेली सहित हिमाचल गहनगृह में विलीन हो जाती हैं। तब महाराज हिमाचल घबराकर पार्वती को ढूँढ़ते हुए विलाप करने लगे कि मैंने विष्णु को वचन दिया है, यह कैसे पूर्ण हो सकेगा। ऐसा कह मूर्च्छित हो गये। तब सभी पुरवासियों को साथ लेकर ढूँढ़ने को महाराज ने पदार्पण कर ऐसी चिंता करके कि क्या मेरी कन्या को व्याघ्र खा गया या सर्प ने डस लिया या राक्षस हर के ले गया। उस समय तुम अपनी सखी के साथ ही गहन गुफा में पहुँचे बिना जल, अन्न के मेरे व्रत आरंभ करके नदी की बालू से शिव प्रतिमा स्थापित कर विविध वन पुष्प, फलों से पूजन करने लगीं। उसी दिन भाद्रमास तृतीया शुक्ल पक्ष हस्त नक्षत्र युक्त प्राप्त थी। मेरी पूजा के फलस्वरूप मैं और मेरा सिंहासन हिल उठा। मैंने जाकर तुम्हें दर्शन दिया और तुमसे कहा हे देवी ! मैं तुम्हारे व्रत और पूजन से अति प्रसन्न हूँ, तुम अपनी कामना मुझसे वर्णन करो। इतना सुन तुमने लज्जित भाव से प्रार्थना की कि आप अंतर्यामी हैं। मेरे मन के भाव आपसे छिपे नहीं हैं। आपको पति के रूप में चाहती हूँ, इतना सुनकर मैंने तुम्हें एवमस्तु इच्छित पूर्ण वरदान देकर अन्तर्धान हो

गया। इसके बाद तुम्हारे पिता हिमाचल मंत्रियों सहित तुम्हें ढूंढते-ढूंढते नदी तट पर मारे शोक के मूर्च्छित होकर गिर पड़े। उसी समय तुम सहेली के साथ मेरी बालू की मूर्ति विसर्जन हेतु नदी तट पर ले पहुँची। उसी समय तुम्हारे नगर निवासी, मंत्रीगण, राजा हिमाचल के और तुम्हारे दर्शन कर अति प्रसन्नता को प्राप्त हुये और तुमसे लिपट-लिपट कर रोने लगे और कहा तुम अपनी सहेली के साथ तुम इस भयंकर वन में कैसे चली आई जो अति भयानक है। जहाँ सिंह, व्याघ्र, जहरीले भयंकर सर्पों का निवास है, जहाँ मनुष्य के प्राण संकट में हो सकते हैं।

इसलिए हे पुत्री इस भयंकर वन को त्याग कर अपने गृह को प्रस्थान करो। पिता के ऐसा कहने पर तुमने कहा - हे पिताश्री! मेरा विवाह आप ने भगवान् विष्णु के साथ स्वीकार कर दिया। इससे मैं इसी वन में रहकर अपने प्राण विसर्जन करूँगी। ऐसा सुनकर महाराज हिमाचल अति दुखी हुए और बोले - प्यारी पुत्री! तुम शोक मत करो, मैं तुम्हारा विवाह कदापि भगवान् विष्णु के साथ न करूँगा। तुम्हारा अभिष्ठ वर जो तुम्हें प्राप्त हैं, उन्हीं सदाशिव के साथ करूँगा। तुम पुत्री मेरे पर अति प्रसन्न हो, तब

मय सहेली के साथ नगर में उपस्थित होकर अपनी माता, सहेलियों से मिलने लगी। कुछ समय बाद शुभ मुहूर्त में मेरा विवाह वेदविधि के साथ महाराज हिमाचल व महारानी मैना ने मेरे साथ कर पुण्य का अर्जन किया। हे सौभाग्यशाली जो सहेली ने हरण कर हिमालय की गुफा में रख, मेरा तीज व्रत किया। इसी से इस व्रत का नाम हरितालिका पड़ा और यह व्रत सब व्रतों का व्रतराज हुआ। यह सुनकर माँ पार्वती ने कहा- हे प्रभो ! आपने मिलने की सुखद कथा सुनाकर मुझे प्रसन्न किया पर इस व्रत के करने का जो विधान व इसका फल मुझे नहीं सुनाया। इसलिए कृपया करके मुझे इसके करने की विधि व पृथक-पृथक फल भी सुनाइये। इतना सुनकर भगवान् सदाशिव ने कहा - प्रिय! मैं इस व्रतराज का फल सुना रहा हूँ, सावधान होकर सुनो। यह व्रत सौभाग्यवती नारी व पति चाहने वाली कन्याओं को करना चाहिए। इससे श्री शंकर भगवान व माता पार्वती जी की कृपा से सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है।

श्री शंकर-पार्वती जी से प्रार्थना करो कि हे प्रभु! जैसी आपने माता पार्वती जी की सुनी वैसी ही प्रभु आप हमारी भी सुनियो। बोलिये माता पार्वती-शंकर भगवान की जय!

卐 श्री हरितालिका तीज का व्रत, विधि, फल व महात्म्य 卐

यह व्रत भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की द्वितीया की शाम से आरम्भ करें। यह व्रत निराहार (बिना फलाहार) और निर्जला होकर रहना चाहिए। भगवान् शिव पार्वती की प्रतिमा सुवर्ण की स्थापित करके केले, पुष्प आदि के खम्भे स्थापित करके, रेशमी वस्त्र के चन्देवा तानकर, वन्दन वारे लगा भगवान् शिव की मूर्ति, बालू का लिंग स्थापित करके पूजन वैदिक मंत्र स्तुति गान वाद्य, भैरी, घंटा, मृदंग, झांझर आदि से रात्रि को जागरण करना चाहिए और भगवान् शिव के पूजन के बाद फल, फूल, पकवान, लड्डू, मेवा, मिष्ठान तरह-तरह के भोग की सामग्री समर्पण करें। ब्राह्मण को अन्न, वस्त्र, पान आदि श्रद्धा युक्त देना चाहिये। भगवान् शिव के प्रति वस्तु को सिद्ध पंचाक्षरी मंत्र से (ॐ नमः शिवाय) कहकर समर्पित करना चाहिए। प्रार्थना करते समय अपनी कामना, इच्छा जो हो भगवान के सामने प्रेरित करके प्रणाम करें, फिर माता पार्वती जी से नीचे लिखी प्रार्थना करें :

卐 प्रार्थना पद 卐

जय जग माता, जय जग माता, मेरी भाग्य विधाता।। टेक।।
तुम हो पार्वती, शिव प्यारी तुम दाता नंक पुरारी।
सती सत् में रेख तुम्हारी जय हो आनन्द दाता।। जय जग...।
इच्छित वर में तुमसे पाऊँ, भूल चूक को दुख न उठाऊँ,
भाव-भक्ति से तुमको पाऊँ, कर दो पूरन बाता।। जय जग...।।

प्रार्थना करने के बाद पुष्पों को दोनों हाथों में लेकर पुष्पांजलि समर्पण करें। फिर चतुर्थी को शिवलिंग किसी नदी व तालाब में विसर्जन करें, फिर तीन ब्राह्मणों को भोजन करा कर दक्षिणा देवें। इस प्रकार यह व्रत पूर्ण करने से नारी सौभाग्यवती होती है व धन-धान्य व पुत्र-पौत्रों से सुखी होकर जीवन व्यतीत करती है। कन्याओं को व्रत करने से कुलीन विद्वान धनवान वर को प्राप्त होने का सौभाग्य होता है। हे देवी जो सौभाग्यवती नारी इस व्रत को नहीं धारण करती वह बार-बार वैधव्य पुत्र शोक को

प्राप्त होती है। जो नारी तृतीया के दिन व्रत रहकर चोरी से अन्न खाती है वह शूकरी का जन्म पाती है। जो फल खाती है, वह बंदरिया की योनि पाती है। जो जल पीती है वह जोक का जन्म लेती है। जो दूध पीती है वह सर्पिणी का जन्म और जो मांस खाती है, बाघिनी का जन्म लेती है। जो दही खाती है वह बिल्ली का जन्म पाती है। जो मिठाई खाती है वह चींटी के जन्म को धारण करती है और जो सब चीजें खाती है, वह मक्खी का जन्म लेती है। जो उस दिन सोती है वह अजगरी योनि प्राप्त करती है। हे उमा! जो नारी अपने पति को धोखा देती है, वह मुर्गी का जन्म धारण करती है। हे उमा! जो इस व्रत को श्रद्धा विधि से धारण करती है, वह मुझसा पति प्राप्त करती है व दूसरे जन्म में तुम्हारे समान स्वरूपवान हो करके संसार में उत्तम सुख भोगती है। इस व्रत को करने के बाद नारियाँ श्री शिवलोक की वासी होती हैं।

बोलिये श्री शंकर भगवान पार्वती माता की जय ।। इति श्री।।

श्री भगवान शिवजी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा स्वामी जय शिव ओंकारा,
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्धांगी धारा। ॐ हर हर हर महादेव
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे
हंसासन गरूड़ा सन वृष वाहन साजे। ॐ हर हर हर महादेव
दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे। ॐ हर हर हर महादेव
अक्ष माला वनमाला रूण्डमाला धारी।
चंदन मृगमद सोहे, भोले शशिधारी। ॐ हर हर हर महादेव
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरूड़ादिक भूतादिक संगे। ॐ हर हर हर महादेव
कर में मध्य कमण्डल चक्र त्रिशूलधर्ता।
जगकर्ता जग भर्ता जग पालनकर्ता। ॐ हर हर हर महादेव
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका। ॐ हर हर हर महादेव
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।
भजत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे। ॐ हर हर हर महादेव

श्री गणेश जी की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ।। जय...
पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन को भोग लगे, सन्त करे सेवा ।। जय...
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
माथे सिंदूर सोहे मूष की सवारी ।। जय...
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया ।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।। जय...
दीनन की लाज राखो शम्भु सुतवारी ।
कामना को पूरा करो जाऊँ बलिहारी ।। जय...
सूर श्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा ।
रिद्धि देत सिद्धि देत बुद्धि देत देवा ।। जय...

श्री कर्पूर द्वारा देवी देवताओं की आरती

ॐ कर्पूर गौरं करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा बसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानि सहितं नमामि।।
मन्दार माला कुलिताल काये, कपाल मालकिंत शेखराय।
दिव्यारम्बरायैं च दिगम्बराय, ॐ नमः शिवायै च नमः शिवाय।।
त्वमेव माता, च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देवा।।

गुरूब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात् परमब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
अखडं मण्डलाकारं, व्याप्तमं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजा चैव न जानामिक्षम्यतां परमेश्वर।। 1।।
मंत्रहीनं क्रिया हीनं, भक्ति हीनं सुरेश्वरं
यत्पूजितं मया देवं परिपूर्ण तदस्तु में।। 2।।

दादा श्यामलाल अग्रवाल आर.के. एण्ड सन्स
जबलपुर द्वारा प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें

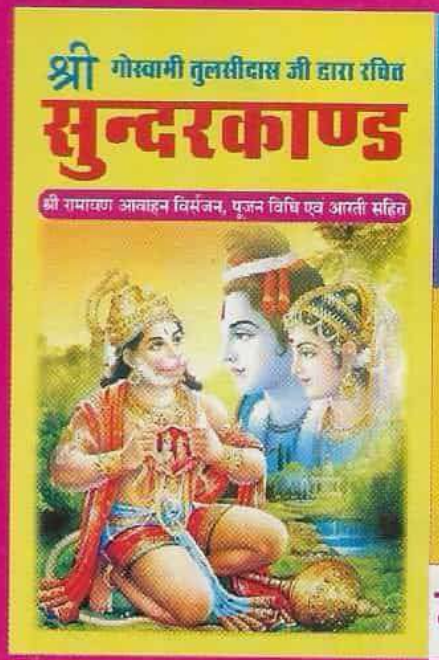

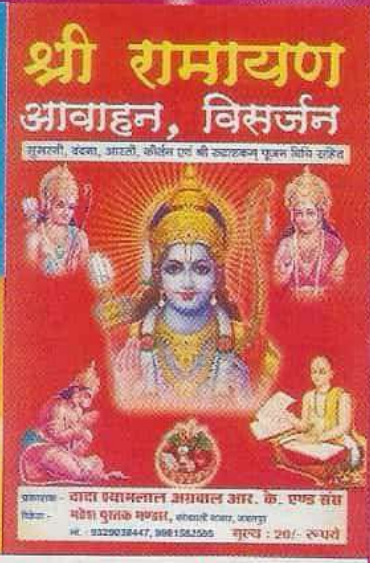

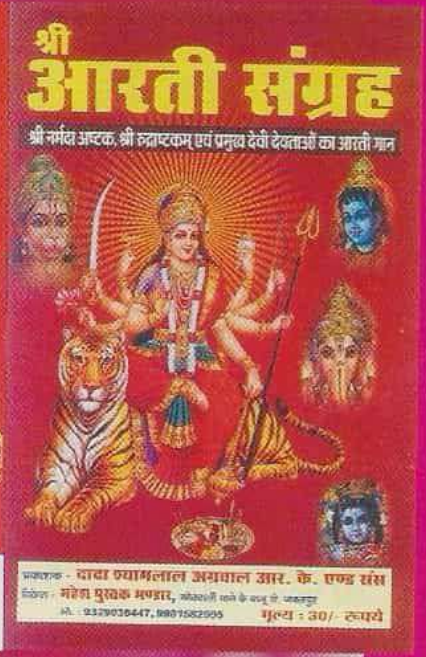

गीता प्रेस गोरखपुर की धार्मिक पुस्तकों के थोक विक्रेता

विक्रेता - महेश पुस्तक भण्डार

कोतवाली थाने के बाजू में, जबलपुर, मोबा. : 7509116262, 9981582595

Mahesh Pustak Bhandar | maheshpustak44@gmail.com | Mahesh Pustak Bhandar